ओ३म्

टके सेर लक्ष्मी

जिस को

हापुड़ ज़िला—मेरठ निवासी

पण्डित रामजीलाल शर्मा

शोधक स्वामियन्त्रालय—मेरठ ने बनाया

और

सामवेदभाष्यकार पं० तुलसीराम स्वामी

ने

स्वीय स्वामियन्त्रालय मेरठ

में

मुद्रित और प्रकाशित किया

—*:*+*:*—

प्रथम वार १००० } ता० १५।८।०१ ई० { मूल्य प्रति पुस्तक ।

ओ३म्

भूमिका

आजकल धन के लाभ के लिये अनेक कम्पनियें खुली हुई हैं कि जिन में अपने २ देश की वस्तुएं अन्य २ देशों में पहुंचाकर धन इकट्ठा किया जाता है। परन्तु आज कल ऐसी कम्पनी कोई दृष्टि नहीं आती कि जिस में लक्ष्मी का विक्रय होता हो और सब वस्तुओं से सस्ती हो। हमने ऐसी कम्पनी की खोज करनी आरम्भ की तो लक्ष्मी के बेचनेवाली अनेक कम्पनी दृष्टि आईं, जिन की आजतक किसी को विज्ञप्ति न थी। जहां ये कम्पनी

दो बाजार हैं १—महापुराण २—उपपुराण। लक्ष्मी

का भाव दोनों बाज़ारों में एकसा है। इन दोनों बाज़ारों में १८। १८ दुकानें हैं। उन दुकानों के स्वामियों ने परस्पर फूट के कारण ऐसा भाव कर रक्खा है कि एक कहता है कि १ मास में मैं इतनी लक्ष्मी देता हूं, दूसरा झट बोल उठता है कि मैं उस से भी अधिक लक्ष्मी १ दिन में दे सकता हूं। इसी तरह आपस में एक से एक सस्ती देता है। हमने उन बाज़ारों से कुछ लक्ष्मी ख़रीदी है, जिस का भाव "टके सेर" रक्खा है अर्थात् १ सेर का एक टका और पृथक् २ दुकानों की पृथक् २ बानगी आप के सम्मुख निदर्शनार्थ प्रस्तुत हैं। यदि आप को पसन्द आवे तो निम्नलिखित पते से मंगा लेना—

पता—श्री सूत जी महाराज—
मालिक "लक्ष्मी कम्पनी" स्तोत्र बाज़ार
पुराण सिटी

यह ऊपर लिखा पता लक्ष्मी के मंगाने का है। हमारे "टक सेर लक्ष्मी" नामक पुस्तक का नहीं, पुस्तक का पता केवल ७ अक्षरों में यह नीचे लिखा है:—

स्वामि प्रेस—मेरठ

(ग्रन्थकर्त्ता)

ओ३म्

देखिये प्रथम तो लक्ष्मीस्तोत्र में ही लक्ष्मी का कैसा सस्ता भाव बताया है कि–

श्रीविष्णुवल्लभास्त्रोत्रं ये पठिष्यन्ति मानवाः।
शृण्वन्ति ये नरास्तद्वा तेषां लक्ष्मीः सुनिश्चला॥
यःपठेत्प्रातरुत्थाय श्रद्धाभक्तिसमन्वितः।
गृहे तस्य सदा तिष्ठेल्लक्ष्मीः केशवसंयुता॥

(अर्थ) जो मनुष्य विष्णुवल्लभास्तोत्र को पढ़ते हैं और जो सुनते हैं उन मनुष्यों के यहां लक्ष्मी सुनिश्चला रहती है। अर्थात् दरिद्रता कभी नहीं आती। जो प्रातः काल उठकर श्रद्धाभक्तिपूर्वक इस स्त्रोत्र का पाठ करता है उस के घर में सदा केशव=विष्णु सहित लक्ष्मी ठहरती है॥

और देखिये आगे इस से भी अधिक सस्ती लिखी है॥

लक्ष्मीहृदयस्तोत्रे–

प्रार्थनादशकं चैव मूलाष्टकमथापि वा।
यः पठेच्छृणुयान्नित्यं लक्ष्मीस्तस्य स्थिरा भवेत्॥

पीतवासां सुवर्णाङ्गीं पद्महस्तां गजान्विताम् ।
लक्ष्मीं ध्यायति मन्त्रेण स भवेत्पृथिवीपतिः ॥

अन्यच्च—

त्रिकालमेककालं वा नरो भक्तिसमन्वितः ।
यः पठेच्छृणुयाद्वापि स याति परमां श्रियम् ॥
महालक्ष्मीं समुद्दिश्य निशि भार्गववासरे ।
इदं श्रीहृदयं जप्त्वा पञ्चवारं धनी भवेत् ॥

(भाषार्थ) जो मनुष्य प्रार्थना के दश (१०) श्लोकों वा मूल के आठ (८) श्लोकों का पाठ करे वा सुने तो उस के लक्ष्मी नित्य स्थिर रहे। अर्थात् कदापि चलायमान न हो । पीले कपड़े वाली, सोने के गहने पहनने वाली (वा सोने के तुल्य चमकीले रंग वाली) हाथ में पद्म रखने वाली, हाथी से युक्त अर्थात् हाथी की सवारीकरने वाली लक्ष्मी का मन्त्रपूर्वक जो पुरुष ध्यान करे, वह पृथिवीपति अर्थात् राजा हो जाय । और भी कहा है कि—जो मनुष्य भक्तिपूर्वक तीन काल वा एक काल (इस लक्ष्मीहृदयस्तोत्र का) पाठ करे वा सुने तो वह बड़ी

लक्ष्मी को प्राप्त होता है अर्थात् उस को बहुतसा धन मिल जाता है॥ महालक्ष्मी के उद्देश से शुक्रवार की रात्रि में इस लक्ष्मीहृदयस्तोत्र को पांचवार जपकर धनी होवे। अर्थात् उक्त स्तोत्र का शुक्रवार की रात्रि में पांचवार पाठ करने से लक्ष्मी प्राप्त होती है॥

देखिये आगे उसी लक्ष्मीहृदयस्तोत्र में और भी सहज में लक्ष्मी मिलजाने का कैसा सरल उपाय बतलाया है कि—

य एकभुक्तोऽन्वहमेकवर्षं, विशुद्धधीः
सप्ततिवारजापी। स मन्दभाग्योऽपि
रमाकटाक्षाद्भवेत्सहस्राक्षशताधिकश्रीः॥

अन्यच्च—

य आश्विने मासि च शुक्लपक्षे, रमास्तवं
सन्निहतैकभक्तया। पठेत्तथैकोत्तरवारवृद्धया,
लभेत्सदा स्वर्णमयीं च वृष्टिम्॥

और भी लीजिये—

अनेन हृदयेनान्नं गर्भिणीं प्रतिमन्त्रितम्।
ददाति तत्कुले पुत्रो जायते श्रीपतिःस्वयम्॥

नरेणाप्यथवा नार्य्या लक्ष्मीहृदयमन्त्रिते।
जले पीते हि तद्वंशे मन्दभाग्यो न जायते ॥

अर्थात्–यदि इस स्तोत्र से पढ़ा हुवा जल गर्भिणी स्त्री को खिलाया जाय तो गर्भ से साक्षात् लक्ष्मी का पति (नारायण) पुत्र पैदा होवे ॥

चाहे पुरुष हो वा स्त्री इन में से कोई भी लक्ष्मी-हृदयस्तोत्र से अभिमन्त्रित किया हुआ जल पीले तो उन के वंश भर में कोई मन्दभागी ही पैदा न होवे। अर्थात सब धनाढ्य ही धनाढ्य पैदा होवें ॥

भला लक्ष्मीस्तोत्र में तो उस का भाव ऐसा बताया है और उस के पति के स्तोत्रों उन का क्या भाव रक्खा है सोभी लिखते हैं। देखिये, विष्णुसहस्रनाम स्तोत्र के पाठ करने के माहात्म्य में यह लिखा है कि–

यशः प्राप्नोति विपुलं ज्ञातिप्राधान्यमेव च।
अचलां श्रियमाप्नोति श्रेयः प्राप्नोत्यनुत्तमम्॥

अर्थात्–विष्णुसहस्रनाम स्तोत्र के पाठ करने वाले को जाति में उच्चता मिलती है और विपुल यश का लाभ होता है और अचला लक्ष्मी प्राप्त होती है और कल्याण प्राप्त होता है ॥

देखिये, गोपालसहस्रनामस्तोत्र में क्या लिखा है कि—

महानिशायां सततं वैष्णवो यः पठेत्सदा।
देशान्तरगता लक्ष्मीः समायाति न संशयः॥

अर्थात्—जो वैष्णव दिवाली की रात्रि में विष्णुसहस्र-नाम स्तोत्र का पाठ करता है, वह अन्य देशों में भी गई हुई लक्ष्मी को प्राप्त होता है। इस में कोई सन्देह नहीं॥

हनुमत्कवचस्तोत्र में लिखा है कि—

त्रिकालमेककालं वा पठेन्मासत्रयं शुचिः।
सर्वान्रिपून्क्षणाज्जित्वासपुमान्श्रियमाप्नुयात्॥

अन्यच्च

अश्वत्थमूलेर्किवारे स्थित्वा पठति यः पुमान्।
अचलां श्रियमाप्नोति संग्रामे विजयं ध्रुवम्॥

अर्थात्—जो मनुष्य तीन काल वा एक काल तक तीन मासपर्य्यन्त पवित्र होकर हनुमान् के कवच का पाठ करे, वह क्षण भर में सब शत्रुओं को जीत कर लक्ष्मी को प्राप्त होता है॥ (और भी) शनिवार के दिन पीपल की जड़ में बैठ कर जो मनुष्य चक्र स्तोत्र का पाठ करता है, वह अचल लक्ष्मी को प्राप्त होता है और संग्राम में विजय पाता है॥

स्वर्णाकर्षणभैरव के स्तोत्र में और भी लक्ष्मी का सस्ता भाव प्रतीत होता है। उस में लिखा है कि–

यः पठेन्नित्यमेकाग्रं पातकैः स विमुच्यते।
लभते च मतिं लक्ष्मीमष्टैश्वर्य्याण्यवाप्नुयात्॥
चिन्तामणिमवाप्नोति धेनुं कल्पतरुं ध्रुवम्।
स्वर्णराशिमवाप्नोति शीघ्रमेव स मानवः॥
स्वर्णराशिं ददात्येव तत्क्षणं नास्ति संशयः।
सर्वदा यः पठेत्स्तोत्रं भैरवस्य महात्मनः॥

अर्थात्– जो मनुष्य एकाग्रचित्त से उक्त भैरव के स्तोत्र का पाठ करता है, वह सम्पूर्ण पातकों से छुट जाता है और बुद्धि तथा लक्ष्मी और अष्टसिद्धियों को प्राप्त होता है। और चिन्तामणि तथा कामधेनु गौ और कल्पवृक्ष को निश्चय प्राप्त होता है और शीघ्र ही निःसन्देह सुवर्ण की राशि=ढेर को प्राप्त होता है॥ और उस पाठ करने वाले मनुष्य को भैरव महात्मा तत्क्षण स्वर्ण की राशि देता है॥

आगे आप के देखने के लिये सप्तशतीसर्वस्व ग्रन्थ में जो हिमालय पर्वत ने लक्ष्मी का भाव बताया है, सो लिखते हैं

सप्तशतीसर्वस्वे २४ विश्रामे

अयुतं यो जपेद्भक्त्या प्रत्यहं परमेश्वरि !
निग्रहानुग्रहे शक्तः स भवेत्कल्पपादपः ॥६॥

अर्थात्–हे परमेश्वरि ! जो मनुष्य भक्तिपूर्वक १० हजार जपता है वह निग्रह और अनुग्रह में शक्ति रखता हुवा कल्पवृक्ष रूप हो जाता है ।। और देखिये फिर वहीं लिखा है कि–

कांसोस्मितामृचं देवि ! सम्पुटीकरणान्नरः ।
लक्ष्मीवाञ्जायते सद्यः शतपाठान्न संशयः॥४॥

अर्थात्–कांसोस्मितां हिरण्यप्राकारामार्द्रां० इत्यादि ऋचा का सम्पुट देकर जो १०० पाठ करता है वह शीघ्र ही लक्ष्मीवान् होजाता है। इस में सन्देह नहीं ।। और आगे फिर वहीं लिखा है कि–

दिनान्येकोनपञ्चाशद्रमाबीजेन सम्पुटम् ।
नित्यं पञ्चदशावृत्तौ लक्ष्मीवान्भवति ध्रुवम्॥

अर्थात्–रमाबीज (श्रीँ) का सम्पुट लगा कर प्रति दिन १५ पाठ सप्तशती के ४९ दिन तक करने वाला निश्चय लक्ष्मीवान् होजाता है ।।

देखिये संकटचतुर्थी के व्रत के माहात्म्य में लिखा है कि—

सिद्ध्यन्ति सर्वकार्य्याणि मनसाचिन्तितानि च।
दारिद्र्यं न भवेत्तस्य संकटा न भवन्ति च ॥

अर्थात्—संकटचौथ के व्रत रखने वालों के सब काम सिद्ध हो जाते हैं और जो मन से सोचता है वही सिद्ध हो जाता है। उसके कभी दरिद्रता नहीं आती और संकट दूर रहते हैं॥

वैशाखमाहात्म्ये—

अलक्ष्मीं कालकर्णीं च दुःस्वप्नं दुर्विचिन्तनम्॥
अश्वत्थतर्पणात्तात सर्वदुःखं विलीयते ॥

अर्थात्—वैशाख मास में पीपल को पानी देने से दारिद्र्य और दुःस्वप्न तथा सर्व दुःख दूर होते हैं, अर्थात् वह मनुष्य धनवान् व सुखी हो जाता है॥

फिर स्वर्णाकर्षण भैरव के मन्त्र की प्रशंसा में मन्त्रमहोदधिकार लिखते हैं कि—

सिद्धं मनुं जपेन्नित्यं त्रिशतं मण्डलावधि।
दारिद्र्यं दूरमुत्क्षिप्य जायते धनदोपमः ॥

जपादिभिर्मनौ सिद्धे यन्त्रौघः सिद्धिमाप्नुयात् ।
सुवर्णमेधते गेहे नैवारेः स्यात्पराभवः ॥

अर्थात्–इस सिद्ध मन्त्र को ३०० प्रतिदिन के हिसाब से ४० दिन पर्य्यन्त जपे तो दरिद्रता को दूर फेंक कर कुबेर के बराबर धनी होजावे ॥ जपादि से मन्त्र सिद्ध होने पर घर में सुवर्ण बढ़ता है और शत्रु से हार नहीं होती ॥

वाराहमन्त्रमाहात्म्ये–

ध्यानाद्देवो धनं दद्याज्जपाद्यादवसुंधराम् ।
प्रयच्छेज्जप पूजाद्यैर्धनं धान्यं महीं श्रियम् ॥

अर्थात्–वाराह महाराज के ध्यान से ध्याता को वाराहदेव * धन देता है। जपकर्त्ता को पृथिवी देता है तथा जप और पूजा आदि के कर्त्ता को धन, धान्य, पृथिवी और लक्ष्मी देता है ॥

शिवपुराण में लिखा है कि–

ये वै प्रदोषसमये परमेश्वरस्य,

* धन्य ! वाराह जी धन्य ! ! ! आप अवश्य धनदाता हैं ! पहिले अपने पालनकर्त्ताओं को तो धनी बनादेवें ! !

कुर्वन्त्यनन्यमनसोऽङ्घ्रिसरोजपूजाम् ।
नित्यं प्रवृद्धधनधान्यकलत्रपुत्र
सौभाग्यसम्पदधिकास्त इहैव लोके ॥

अन्यच्च–

सर्वदारिद्र्यशमनं सौमाङ्गल्यविवर्द्धनम् ।
यो धत्ते कवचं शैवं स देवैरपि पूज्यते ॥

अर्थात्–जो मनुष्य प्रदोष समय में शिव जी के चरण कमलों की नित्यपूजा करते हैं, वे सदा धन, धान्य, स्त्री, पुत्र सौभाग्य, सम्पत्ति में बढ़े हुवे इसी लोक में रहते हैं ॥

महाशयो! अब सब प्रमाणों के अन्त में आप को एक सत्यनारायण का प्रमाण और देते हैं कि उस की सत्यता आप को प्रकट होजावे । उस में लिखा है कि–

धनधान्यादिकं तस्य भवेत्सत्यप्रसादतः ।
दरिद्रो लभते वित्तं बद्धो मुच्यते बन्धनात् ॥

अर्थ यह है कि–सत्यनारायण के प्रसाद से धन और धान्यादि ऐश्वर्य मिलते हैं । दरिद्र मनुष्य यदि यह व्रत करे और कथा सुने तो धन का लाभ उठावे । यदि क़ैदी करे तो क़ैद से छुटकारा पावे ॥

निवेदन

इस पुस्तक के आरम्भ से अन्त तक लिखे प्रमाणों से तो आप को भले प्रकार ज्ञात हो गया होगा कि पुराणों में तुच्छ २ कार्यों से लक्ष्मी का ढेर लगजाना शतशः स्थानों पर लिखा है। महाशयो! इस ही लोभ ने हमारे भारतवर्ष के मनुष्यों विशेषकर ब्राह्मणों को तो ऐसा निरुद्यमी और आलस्ययुक्त बनादिया है कि अन्य (क्षत्रिय वैश्य आदि) जातिके मनुष्य तो कुछ न कुछ वृत्ति (रोज़गार) कर अपना उदरभरण कर लेते हैं, परन्तु हमारे अग्रजन्मा भातृगण जो पठित नहीं हैं वे तो अन्य वर्णों की अनुचर्य्या करके अपना जीवन व्यतीत करते हैं, परन्तु जो पौराणिक परिपाट्यनुसार कुछ विद्याध्ययन कर भी लेते हैं, उन को तो केवल भूत, प्रेत सिद्ध करने तथा देवी चामुण्डा, काली, दुर्गा, भैरव, हनुमान्, स्वर्णाकर्षण-भैरव आदि कल्पित देवाभासों के स्तोत्रों से व्यवहार करना पड़ता है और यह समझ लेते हैं कि हमारे लिये तो येही लक्ष्मीप्रद हैं। अतएव वे ऐसे उद्यमरहित होजाते हैं कि उन से वास्तविक लक्ष्मीप्रद उद्योग होता ही नहीं। यदि

कोई उन से कहे कि आप अमुक कार्य कीजिये वा अमुक व्यवहार वा व्यापार कीजिये, इस के करने से आप को धन का लाभ होना सम्भव है तो उन को यह अमसाध्य कार्य कटुकौषध कटु लगता है। वे कदापि इस ओर नहीं झुकते और वहीं आसन बिछाय गोमुखी में हाथ डाले मुख से वारंवार यही उच्चारण किया करते हैं कि-"ओं ह्राँ ह्रीँ ह्रूँ क्लाँ क्लीं क्लूँ दारिद्र्यभञ्जनाय महाभैरवाय स्वर्णाकर्षणभैरवाय नमः मे दारिद्र्यं नाशय २ बहुधनं देहि २ सर्वसिद्धिं कुरु २ स्वाहा" भला जिन के अन्तः करण में ऐसा भाव घुस रहा है तो क्या सम्भव है कि ऐसे मनुष्यों से देश का उद्धार होसके? कदापि नहीं ॥

देखिये मनुजी महाराज मनुस्मृतिमें कैसा लिखते हैंकि-

एतद्देशप्रसूतस्य सकाशादग्रजन्मनः ।
स्वंस्वंचरित्रंशिक्षेरन् पृथिव्यां सर्वमानवाः ॥

अर्थात्-इस ही देश में पैदा हुवे अग्रजन्मा=ब्राह्मणों से सब मनुष्य अपना २ कर्त्तव्य धर्म सीखें॥ आज हम लोग इस श्लोक से सर्वथा प्रतिकूल व्यवहार कर रहे हैं। यदि कोई ब्राह्मणेतर वर्ण पौराणिक स्तोत्रों के श्रद्धालु अय-

जन्माओं से यह पूछते हैं कि महाराज! हमारे सन्तान नहीं होती वा रोजगार में लाभ नहीं होता, इस का क्या कारण है? यदि आप इसका कुछ धर्मानुसार प्रतीकार शोधें तो बड़ा ही अनुग्रह हो। इस पर उद्यमरहित अशास्त्र लोग वास्तविक प्रतीकार बताने के बदले अपने कार्य चामुण्डा, भैरव, हनुमान् इत्यादि इष्टदेवाभासों को अपने द्वारा ही भेंट चढ़ाना आदिरूप प्रतिकार बतलाते हैं, जिस का परिणाम यह होता है कि अधिष्ठाता और यजमान दोनों आलस्ययुक्त होकर निरुद्यमी हो जाते हैं। अतः जिन मनुष्यों को ऐसे स्तोत्रों के पाठमात्र से धन-लाभ का पूर्ण विश्वास है, उन से निवेदन है कि वह इस पुस्तक के लिखे अनुसार करके देखें तो ठीक २ ज्ञात हो जायगा कि ये सब स्तोत्र कपोलकल्पितलेखयुक्त और असत्य हैं और यदि धन प्राप्ति का कुछ हेतु है तो केवल एक धर्मानुकूल उद्योग करना ही है ॥ इति शम् ॥

आप का—हितेच्छुः—

(हापुड़ निवासी)

रामजीलाल शर्मा

गुरु विरजानन्द ...
... परिग्रहण क्रमांक ... 4838
... दयानन्द महिला महावि...